

पाठ –25 राजदूत संजय

पांडवों ने सात अक्षौहिणी सेना एकत्र की और
कौरवों ने ग्यारह अक्षौहिणी सेना एकत्र की ।

पांचाल नरेश पुरोहित युधिष्ठिर की ओर से दूत
बनकर गए थे जिनकी बात विवेकशील और
महारथी भीष्म को भी न्यायोचित लगी ।

भीष्म बोले कि उनका राज्य उन्हें वापस दे दिया
जाए और युद्ध को टाला जाए ।

हस्तिनापुर की ओर से संजय दूत बनकर उपप्लव्य नगर पहुँचे ।

सभा में सबको विधिवत प्रणाम कर संजय बोले कि महाराज आपकी कुशल क्षेम पूछी है और कहा है कि वह युद्ध नहीं चाहते; वह आपसे मित्रता चाहते हैं ।

संजय की बातें सुनकर युधिष्ठिर ने भी कहा कि मैं भी संधि ही चाहता हूँ । युद्ध की बात सुनकर मेरे मन में भी घृणा का भाव आता है । मुझे तो बस मेरा राज्य वापस मिल जाए ।

युधिष्ठिर का संदेश लेकर और श्रीकृष्ण से विदा लेकर हस्तिनापुर को रवाना हो गए ।

धृतराष्ट्र ने संतप्त होकर दुर्योधन ने समझाने का प्रयास किया कि भीष्म पितामह की बात मानने में ही भलाई है । युद्ध की बजाए संधि करने में ही भलाई है ।

श्रीकृष्ण बोले कि धर्मपुत्र शांति स्थापित करने के लिए मुझे एक बार वहाँ जाकर प्रयास करना चाहिए ।